शान्ति मन्दिर द्वारा प्रकाशित यह ई-पत्रिका आप सबको समर्पित है ।

सिद्ध मार्ग

© Shanti Mandir अक्टूबर २०१३, संस्करण १४

सृष्टि ये प्रभु की है, प्रभु द्वारा बनाई हुई और बनाकर प्रभु की चैतन्य शक्ति इसी सृष्टि में रहती है ।

प्रिय आत्मन्, सप्रेम जय गुरुदेव! सिद्ध-मार्ग ई-पत्रिका का चौदहवाँ अंक प्रस्तुत है । इस अंक में गुरुदेव महामण्डलेश्वर स्वामी नित्यानन्द जी द्वारा कुछ समय पूर्व दिल्ली में दिये गये प्रवचन के सम्पादित अंश प्रस्तुत हैं ।

"श्रीगुरुदेव का प्रवचन"

स्वभाव हमारा आनन्द का है, उसी आनन्द में हमको रहना है, न कि आरोपित दुःख, जो हम देखते हैं, चला जाता है, रहता नहीं है, चाहे आप उसको कितना भी पकड़ कर रखें । सृष्टि ये प्रभु की है, प्रभु द्वारा बनाई हुई और बनाकर प्रभु की चैतन्य शक्ति इसी सृष्टि में रहती है । हालांकि हम उस परमात्मा, उस प्रभु के दर्शन इन आँखों से नहीं कर पाते, नहीं समझ पाते, लेकिन कहीं न कहीं कभी न कभी इस बात को हम मानते हैं कि कुछ एक शक्ति है जिससे ये सृष्टि बनी है, सृष्टि चल रही है, और हम भी उसी सृष्टि के अन्तर्गत जी रहे हैं । बाबा मुक्तानन्द जी एक कहानी कहा करते थे, कि एक वैज्ञानिक भगवान् को नहीं मानते थे । वह कहते थे कि सब स्वभाव से है,

परमात्मा की चेतन शक्ति है, जिसने ये सृष्टि बनाई है ।

सब प्रकृति है, परन्तु उसकी पत्नी और उनके बच्चे भगवान् को मानते थे, घर में बहुत चर्चा हुआ करती थी । वैज्ञानिक पिता कहते हैं कि ये सारी सृष्टि ऐसे ही बनी है इसका कोई कर्ता नहीं, इसका कोई सृष्टा नहीं । पत्नी और बच्चे हमेशा यह कहते हैं कि एक परमात्मा की चेतन शक्ति है, जिसने ये सृष्टि बनाई है । पिता इस बात को नहीं मानते हैं । तो उनका बेटा उनके डेस्क पर सफेद कोरा पृष्ठ रख देता है, पिता जी उस पृष्ठ को देखते हैं और कहते हैं कागज है । रात को उनका बेटा उस पर एक श्रीकृष्ण भगवान् का चित्र रखता है । अगले दिन जब पिता उठ कर अपने डेस्क पर जाते हैं, देखते हैं कि कोरा कागज था उस कोरे कागज के ऊपर भगवान् श्रीकृष्ण का चित्र बना हुआ है । जिस बेटे ने ये जो भगवान् का चित्र बनाया था उसने अपने घर वालों से कह दिया कि कोई कहेगा नहीं कि ये चित्र किसने बनाया है । उसने अपनी युक्ति, अपनी बात सबको समझा दी । तो जब पिता पूछते हैं कि ये किसने बनाया? तो बेटा कहता है जैसे ये सृष्टि अपने आप से बनी है वैसे ही यह कागज रातों रात अपने आप चित्र बन गया । पिता कहते हैं कि तुम मुझे मूर्ख समझते हो ? चित्र यूं ही थोड़े बनता है ? चित्र को तो कोई बनाता है । बेटा कहता है कि नहीं, सामने रंग वाले की दुकान है, वहाँ से रंग रात को उड़ कर आया । जिस तरह से ये रंग यहाँ इस कागज के ऊपर पड़ गया उससे भगवान् श्रीकृष्ण का चित्र बन गया । पिता थोड़ा वाद विवाद करता है । मान सकते हो थोड़ी तो चर्चा हुई होगी, लेकिन बेटा अपनी बात को लेकर स्थिर हो जाता है । आप अक्सर सोचते हो कि इतनी बड़ी सृष्टि अपने

पञ्चाङ्ग में जो समय दिया जाता है, आप देखोगे प्रायः उसी समय सूर्योदय होता है, तो बाबा जी पूछते थे इससे बढ़कर जीवन में, सृष्टि में क्या चमत्कार मान सकते हैं ।

आप से बन सकती है, तो ये तो छोटा सा चित्र है, चित्र क्यों नहीं अपने आप बन सकता ? पिता भी सोचने लगता है कि बेटे की बात ठीक तो है, ये जो मैं मानता हूँ कि ये सृष्टि अपने आप से बनी है, अपने आप से कैसे बनी है ? कोई तो बनाने वाला होगा । भले हम उसको नाम कुछ अलग दें, रूप कुछ अलग दें, सब अपने अपने भाव से किसी न किसी रूप से उसे पूजते हैं, परन्तु वास्तव में कोई तो है । तो पिता जब बात को मान जाते हैं, तो बेटा कहता है कि ये चित्र मैंने बनाया है । और समझाता है पिता जी ये सिर्फ आपको समझाने बताने के लिए कि कोरे कागज के ऊपर अगर चित्र अपने आप से नहीं बन सकता है तो ये सारी सृष्टि कैसे बनी ? बाबा जी कहते थे लोग चाहते हैं कि चमत्कार देखूँ । यानि जीवन में कुछ चमत्कार हो । ऐसा कुछ कर दो, कि मैं मानूँ । तो बाबाजी कहते थे कि आप सुबह उठो, पूर्व की और मुख करो जहाँ सूर्य उदय होता है, सूर्य को उदित कौन करता है ? उसका एक निश्चित समय होता है, उस समय पर उदय होता है । तो आप अपने आपसे पूछो कि ये सूर्य को कौन कहता है कि तुम आज उदय हो जाओ ? आप सोचिए सूर्य भगवान् भी अगर जहाँ वे रहते हैं वहाँ भी ठण्डी ठण्डी हवा चल रही है वो भी सोचे कि आज जरा २ मिनट, ५ मिनट, चाय पी के चलूँ तो ? लेकिन नहीं, अखबार में, इन्टरनेट में, पञ्चाङ्ग में जो समय दिया जाता है, आप देखोगे प्रायः उसी समय सूर्योदय होता है, तो बाबा जी पूछते थे इससे बढ़कर जीवन में, सृष्टि में क्या चमत्कार मान सकते हैं । वह ही सूर्य पूरा चल कर शाम जब पूरी होती है, तो अस्त भी हो जाता है । और आप देखेंगे सूर्य अपने समय पर अस्त हो जाता

है । तो हमारे महेश्वरानन्द जी महाराज कहते हैं कि जैसे हम अपने घर के अन्दर बल्ब लगा लेते हैं, कि हमको प्रकाश चाहिए, वैसे ही भगवान् के इस छत पर, यानि उन्होंने आकाश को छत की उपमा दी है, सूर्य, चन्द्र और तारे ये सब भगवान् के बनाए हुए प्रकाशमय बल्ब हैं, ऐसा सोचना चाहिए । उनकी सृष्टि को वो प्रकाश देते हैं, सूर्य अपना प्रकाश देता है, चन्द्र अपना प्रकाश देता है, तारे अपना प्रकाश देते हैं । वैज्ञानिक यह भी कहते हैं कि हम ये सोचें और विचार करें कि वो कितने बड़े हैं । हमको तो छोटे दिखते हैं । जब हमें समझ आयेगा वो कितने बड़े हैं, तब हमें पता पड़ेगा हम कितने छोटे हैं । तो उस वैज्ञानिक पिता जैसे हम लोग भी कभी तर्क करते हैं, कभी बहस करते हैं । कई बार लोग पुनः पुनः प्रश्न करते हैं कि आदमी गलत क्यों करता है ? अगर व्यक्ति को पता है कि गलत का फल गलत होगा, तो फिर भी व्यक्ति गलत क्यों करता है ? यह एक सभी के मन में बड़ा प्रश्न है । सब जानते हैं, सभी को ज्ञान है कि कर्म जो हम करते हैं उन कर्मों का फल हमको मिलता है । फिर भी उस क्षण में व्यक्ति गलत क्यों करता है? ये जो कुछ भी है सूर्य, चन्द्र, तारे जो दिखते हैं और जो नहीं दिखते हैं, ये सब साक्षी हैं, उन सब कर्मों के, जो हम जीवन भर करते हैं । बाबा जी एक बहुत अच्छी कहानी कहा करते थे । दो शिष्य एक गुरु के पास जाते हैं और समझना चाहते हैं कि भगवान् कहाँ हैं और भगवान् कहाँ नहीं है ? तो दोनों को गुरु सेब दे देते हैं और बोलते हैं इसको वहाँ खा कर के आओ जहाँ परमात्मा नहीं हैं । पहला तो सीधा शौचालय में चला जाता है, अनुमान लगा

सूर्य, चन्द्र, तारे जो दिखते हैं और जो नहीं दिखते हैं, ये सब साक्षी हैं, उन सब कर्मों के जो हम जीवन भर करते हैं ।

ये शरीर तब तक जीवित है, जब तक भगवान् की चैतन्य शक्ति इस शरीर में है ।

लेता है यहाँ थोड़े ही कोई देख रहा है, सेब खा के आ जाता है । दूसरा तो बहुत घूमता हुआ, भटकता हुआ, सभी जगह जाकर शाम को सेब ला कर लौटा देता है । गुरु पहले से प्रश्न करते हैं कि तुम को ऐसी जगह मिली जहाँ भगवान् नहीं हैं ? हाँ, शौचालय में कोई नहीं था, कोई नहीं देख रहा था, मैंने कुण्डी लगा लिया था । और दूसरे से पूछा तुम ? बोले जहाँ कहीं भी गया वहाँ ऐसा अनुमान हुआ, अनुभव हुआ कि भगवान् देख रहे हैं, अकेला होने पर भी मैंने ये अनुभव किया कि भगवान् देख रहे हैं । अगर हम बाबा जी की बात को समझ रहे हैं तो आप में ही आपका राम आप हो कर रहता है । कि भगवान् और कहीं नहीं दिखता है, तो अपने में तो है, अपने में बैठा हुआ है । साक्षी रूप में चैतन्य है, देख तो रहा ही है । हम भूल जाते हैं कभी, जैसे पहला शिष्य भूल गया कि भले बाहर से नहीं दिख रहा है, लेकिन मेरे अन्तर में बैठा मुझे देख तो रहा है । इसमें एक बात का हम विचार करें कि ये शरीर कब जीता है । कब तक हम इस शरीर को जीवित कहते हैं कि ये शरीर जिन्दा है ? ये शरीर तब तक जीवित है, जब तक भगवान् की चैतन्य शक्ति इस शरीर में है । जब वो शक्ति इस शरीर को त्याग देती है तो हम कहते हैं कि चल बसे । हम अच्छे अच्छे शब्दों का उपयोग करते हैं । वास्तव में हम इतना ही कहना चाहते हैं कि गये । क्या गये ? उसके अन्दर जो आत्मा है । आत्मा की तो हमारे उपनिषद् तथा शास्त्रों में बहुत चर्चा होती है कि हमें कुछ देखना है, समझना है, जानना है इस जीवन में तो उस आत्मा को देखना है, समझना है, जानना है । बाकि सब

जब समय आ जाता है, बुद्धि जागरित हो जाती है तो मालूम होता है कि हम यूं ही समय व्यर्थ गँवा रहे हैं ।

जो हम कर रहे हैं, जब समय आ जाता है, बुद्धि जागरित हो जाती है तो मालूम होता है कि हम यूं ही समय व्यर्थ गँवा रहे हैं । आप सोचिए, विचार कीजिए, प्राचीन काल में हमारे यहाँ गुरुकुल हुआ करते थे, जब बेटा ८ वर्ष का हो जाया करता था हम उसको गुरुकुल में भेज देते थे जहाँ अन्य अन्य ऋषिजन उसको संसार में, इस समाज में रहने के लिए तैयार करते थे । उसको एक मशीन बना कर नहीं भेजते थे लेकिन उसको एक मनुष्य, सज्जन बना कर भेजते थे । वो व्यक्ति जब समाज में आता था तो वो समाज के लायक, समाज के अनुरूप बन कर आता था । फिर उसको एक पत्नी दी जाती थी, एक लड़की दी जाती थी । उसको भी इसी तरह से तैयार किया जाता था कि तुमको इसको समाज के अनुरूप चलाना है । और तुम को भी इसके साथ इसके अनुरूप चलना है । तो दोनों ये ही प्रयास करते थे कि समाज में रहते हुए, समाज को समझते हुए, समाज को समझाते हुए हम को समाज में रहना है । क्यों वे गुरु के पास १२ या १४ वर्ष रहा करते थे । आज कल तो हमको इस प्रकार से तैयार नहीं किया जाता है । न लड़के को और ना ही लड़की को । बड़ी बड़ी पुस्तक पढ़ कर, बड़े सर्टिफिकेट ले कर आ जाते हैं, लेकिन सर्टिफिकेट के साथ न बुद्धि का विकास हुआ है, न समझ का विकास हुआ है । पिछले वर्ष जब हमारे यहाँ यज्ञोपवीत संस्कार हुए, तो हमारे वेदाचार्य जी ने कहा कि अगर चारों वेद पढ़े तो उसको उत्तर भारत में चतुर्वेदी कहते हैं । अगर वो चारों वेद पढ़े तो एक वेद को पढ़ने के लए उसको १२ वर्ष पढ़ना पड़ता था ।

हमारे जो पूर्वज हुए वो तो सुखी थे, उनके पास वस्तुएँ कम थीं और वे लोग कभी कहीं गये ही नहीं, परन्तु सन्तोष, तृप्ति ये उनके अनुभव थे ।

कुल मिलाकर वह ४८ वर्ष पढ़ता था और ८ वर्ष का वो पहले से ही होता था तो पूरा षष्ठि पूर्ति करके ही वो वहाँ से निकलता था । ६० वर्ष का तब हो जाया करता था । तो और शायद शादी हो जाती होगी गुरुकुल में ही, ऐसा अनुमान लगा सकते हैं । वहीं पर बच्चे भी बड़े हो जाते थे । उस परिवार को पूर्णतः वो वातावरण मिलता था, तो ये लोग जब समाज में आते थे, तो समाज को एक दिशा देते थे, समाज का मार्गदर्शन करते थे, और समाज भी उनको मानता था । आज मुझे किसी ने विदेश से एक आर्टिकल भेजा कि बच्चों को हरी सब्जी और टमाटर खिलाओ, क्योंकि विदेश में, जैसे यहाँ भी हो रहा है, बच्चों को आप पूछो कहाँ खाओगे तो बोलेगा McDonald में Pizza खाऊँगा। Maggi से शायद शुरुवात होती है क्योंकि माँ के पास समय नहीं होता, पानी उबाल दिया, वो डाल दिया, घोल दिया और बच्चे को दे दिया । माँ तो कभी कभी दूध भी नहीं पिलातीं क्योंकि टी.वी. पर बता दिया कि बच्चे को डब्बे से पिला दो, माँ सोचती है अपना काम जल्दी हो गया । तो बच्चा तब से गलत मार्ग पर चल देता है । अपने यहाँ तो यह सब शुरु कर रहे हैं किन्तु विदेश में पिछले ४० वर्षों से ये ही चल रहा है । आज जो हमारा जीवन है, प्रकृति से बहुत दूर है। हम पूछें अपने आप से कि हमारे जो पूर्वज हुए वो तो सुखी थे । उनके पास वस्तुएँ कम थीं और शायद जिस गाँव में उनका जन्म हुआ उसी गाँव में मृत्यु भी हो गयी । वे लोग कभी कहीं गये ही नहीं, परन्तु सन्तोष, तृप्ति ये उनके अनुभव थे । आज हम घूमे ज्यादा हैं, संसार ज्यादा देखा है, पर

आज मनुष्य अतृप्त हो गया है,असन्तुष्ट हो गया है । स्वरूप हमारा आनन्दमय है और हम अपने आप से पूछें कि हमें क्या हो गया है ? बाबाजी एक भजन गाते थे मेरा सत् चित् आनन्द रूप कोई कोई ही जाने - सत् वो है जो हमेशा था, हमेशा है और हमेशा रहेगा ।

सत् वो है जो हमेशा था, हमेशा है और हमेशा रहेगा ।

"सद्गुरुनाथ महाराज की जय"